13 दिसंबरः भारतीय संसद पर हमले का अजीबोग़रीब मामला

संपादन तथा प्रस्तावनाः अरुंधति रॉय

13 December: Bhartiya Sansad Par Hamle Ka Ajeeb-o-Ghareeb Maamla

Edited by Arundhati Roy

प्रकाशकः *पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से*

प्रकाशितः *जून 2007*

मुद्रणः *पेंगुइन*

मूल्यः *रु 175.00*

आई एस बी एनः *0143102885*

ऐडिशनः *पेपर बैक*

फ़ॉरमेटः *बी*

पृष्ठः *280*pp

वर्गीकरणः कथेतर *- अनूदित*

क्षेत्र अधिकारः *विश्व*

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** June 2007
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs.175.00
- **Cover Price:** Rs.175.00
- **ISBN:** 0143102885
- **Edition:** Paperback
- **Format: B**
- **Extent: 280pp**
- **Classification:** Non Fiction
- **Rights:** World

13 दिसंबर, 2001 को ज़बरदस्त ढंग से हथियारों से लैस पांच (कुछ कहते हैं छह) लोगों ने भारतीय संसद पर हमला किया। हम अब तक नहीं जानते कि हमले के पीछे कौन था; कौन हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय दोनों ने टिप्पणी की है कि पुलिस ने क़ानूनी रक्षाकवचों का उल्लंघन किया, सबूत गढ़े और झूठी स्वीकारोक्तियां हासिल कीं। अब 'समाज की सामूहिक अंतरात्मा' को 'संतुष्ट' करने के लिए अफ़ज़ल नामक एक व्यक्ति को फांसी पर लटकाकर मौत देने की सज़ा सुनाई गई है।

इस लेख शृंखला में वकीलों, शिक्षाविदों, पत्रकारों और लेखकों के पंद्रह निबंधों को एक साथ प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने उपलब्ध तथ्यों को नज़दीक से देखा है और जांच और मुक़द्दमे के संबंध में गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने दर्शाया है कि शायद ही कोई सबूत जांच पर खरा उतरता हो, साथ ही उन्होंने संसद पर हमले और इसके बाद के घटनाक्रम की निष्पक्ष और पारदर्शी जांच की अत्यावश्यक ज़रूरत पर बल दिया है।

इस संस्करण में हाल ही में मोहम्मद अफ़ज़ल से किया गया एक साक्षात्कार भी सम्मिलित है।

संपादक परिचय

सन् 1997 के बुकर सम्मान से सम्मानित अरुंधति रॉय की साहित्यिक पहचान उनके उपन्यास 'द गॉड ऑफ़ स्मॉल थिंग्स' से बनी। आप 'द एलज़ेब्रा ऑफ़ इनफ़ाइनाइट जस्टिस' और 'एन ऑर्डिनरी पर्सन्स गाइड टू एम्पायर' दो निबंध संग्रहों की लेखिका हैं।